प्रकाशकीय निवेदन - २०००

धवला षट्खंडागम सिद्धांत ग्रंथके प्रथम खंडके प्रथम भाग की द्वितीय पुस्तक जीवस्थान सत्प्ररूपणाकी द्वितीय आवृत्तिका संशोधित पुनर्मुद्रण करनेमें हम अपना सौभाग्य समझते हैं।

इस ग्रंथराजके मूल सम्पादक स्व. पं. फूलचन्द्रजी सिद्धान्त शास्त्रीजी का वृद्धापकालके कारण स्वर्गवास होनेसे इस ग्रंथका पुनर्मुद्रण करते समय उनकी पावन स्मृतिको श्रद्धांजलि समर्पण कर हम समवेदना प्रकट करते हैं।

इस ग्रंथका प्रूफ संशोधन कार्य जीवराज जैन ग्रंथ मालाके संपादक स्व. पं. नरेन्द्रकुमार भिसीकर शास्त्री तथा सहाय्यक श्री. धन्यकुमार जैनी तथा मुद्रणकार्य स्टेप इन प्रोसेस, पुणे इनके द्वारा संपन्न हुआ है। इनके सहयोग के लिए हम आभार प्रदर्शित करते हैं।

रतनचंद सखाराम शहा.

मंत्री